

GEODL – 4

BLOCK - 2

UNIT 3

Evaluation of Language Skills

Dr. Kranti Verma

Asst. Prof.

Victoria College of Education,

Bhopal

M. N. 9981865910

Krantiv5@gmail.com

इकाई 3 भाषा कौशलों का मूल्यांकन

संरचना

- 1.1 प्रस्तावना
- 1.2 उद्देश्य
- 1.3 भाषा बोध अर्थ एवं मूल्यांकन
- 1.4 शब्दकोष
- 1.5 व्याकरण
- 1.6 रचना
- 1.7 सारांश
- 1.6 चिंतन के लिए प्रश्न
- 1.7 प्रगति की जांच के लिए उत्तर
- संदर्भ ग्रंथ सूची

3.1 प्रस्तावना

भाषा की दृष्टि से शब्द का बड़ा महत्व है। आदिम युग से लेकर अर्वाचीन युग तक व्यक्ति जो कुछ ज्ञान ग्रहण कर पाया है वह शब्दों के रूप में ही आज विश्व के सामने संचित तथा सुरक्षित है। भावों की अभिव्यक्ति का एकमात्र साधन शब्द ही है। वक्ता या लेखक अपने शब्दकोष के बल पर ही मैदान मार लेता है। शब्द भाषा के क्रमिक विकास की रूपरेखा है, लेखक की शक्ति है तथा व्याकरण और भाषा-विज्ञान का प्राण है। किसी भाषा का ज्ञान तब तक अधूरा है, जब तक उस भाषा में प्रयुक्त शब्दों का पूरा-पूरा ज्ञान न हो। किसी समाज अथवा राष्ट्र के इतिहास की जानकारी प्राप्त करनी हो तो उसकी भाषा का ज्ञान प्राप्त करना होगा। यदि किसी भाषा की गंभीरता और हल्केपन का पता लगाना हो तो उसकी शब्दावली पर दृष्टि डालनी होगी। इन सभी बातों के आधार पर हम कह सकते हैं कि शब्द भाषा की निधि है।

व्याकरण वह शास्त्र है जो भाषा से संबंधित नियमों का ज्ञान कराता है। किसी भाषा की संरचना का सिद्धांत अथवा नियम ही उसकी व्याकरण है। यदि नियमों द्वारा भाषा की स्थिति न रखी जाए तो उसकी उपादेयता, महत्व तथा स्वरूप ही नष्ट हो जायेगा। अतः भाषा के शीघ्र परिवर्तन को रोकने के लिए ही व्याकरण का उस पर नियंत्रण कर दिया गया है। भाषा यदि साध्य है तो व्याकरण उसका साधन है। व्याकरण भाषा का अनुशासन मात्र ही करता है, शासन नहीं। व्याकरण भाषा का सृजन नहीं परिष्कार करता है।

रचना का अभिप्राय है विचारों को क्रमबद्ध करके शब्द समूहों में व्यक्त करना। रचना शब्द बहुत व्यापक है। रचना में विभिन्न प्रकार की वाक्य रचना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसके साथ ही साथ वाक्यों की पूर्ति करना चित्र, वर्णन, वार्तालाप, शब्द प्रयोग, पत्र-लेखन, कहानी लेखन, वर्णनात्मक, विवरणात्मक तथा विचारात्मक लेख, पुस्तकों को समालोचना, सारांश लिखना, वाक्यांशों व मुहावरों का प्रयोग, समानार्थी व विलोम शब्दों का ज्ञान व प्रयोग, पर्यायवाची शब्द लिखना, रचना के अन्तर्गत आता है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप जानेगें –

- भाषा बोध का अर्थ जान सकेंगें।
- शब्दकोष को समझ सकेंगे।
- व्याकरण का महत्व समझेंगें।
- रचना को जान सकेंगें।

3.3 भाषा बोध अर्थ एवं महत्व

बोध का अर्थ

बोध का अर्थ है भाषा –विशेष में स्वीकृत लिपि –प्रतीकों के माध्यम से विचारों तथा भावों की समझ। सामान्यतः प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि –व्यवस्था होती है। इन लिपि–प्रतीकों को वही ही समझ सकते हैं। जिन्हें उस भाषा की लिपि –व्यवस्था का ज्ञान है। इसका तात्पर्य यह है कि लेखक द्वारा लिपिबद्ध विचारों तथा भावों को वे ही पढ़ और समझ सकते हैं, जिन्हें उस भाषा तथा उसकी लिपि–व्यवस्था की समुचित जानकारी है स्पष्ट है कि लेखन लिपि–प्रतीकों के माध्यम से विचारों तथा भावों की अभिव्यक्ति का साधन है।

भाषा कौशलों का मूल्यांकन

भाषा कौशलों के मूल्यांकन के लिए दो प्रकार के परीक्षण उपयोग किए जाते हैं—

1. मानकित और औपचारिक परीक्षण— मानकित परीक्षण व्यापक पैमाने पर उपयोग के लिए बनाए गए हैं, जो दार्घकालिक विकास के लिए तुलनात्मक जानकारी देने के लिए उपयोगी होते हैं।

2. अनौपचारिक या अध्यापक निर्मित परीक्षण— अनौपचारिक परीक्षण दैनिक मूल्यांकन है, जो विद्यालयों में अध्यापकों द्वारा निर्मित परीक्षणों और तकनीकों के उपयोग द्वारा किया जाता है। इसमें सही गलत चयन, वाक्य पूर्ति, बहु-विकल्पीय उत्तर आदि सम्मिलित हैं।

श्रवण कौशल का मूल्यांकन

ब्राउन काल्सन का श्रवण का समझ परीक्षण 9713 श्रेणी के लिए इस विषय का पहला परीक्षण है और व्यवसायिक रूप में उपलब्ध है। इसका उद्देश्य छात्रों की सुनी हुई बात को समझने की योग्यता को मापना है। परीक्षण मौखिक रूप से लिया जाता है और 30-40 छात्रों पर किया जा सकता है।

श्रवण परीक्षण अभ्यास

परीक्षार्थियों को निर्देश— आपको निम्न प्रश्नों के उत्तर सुनकर देने हैं। प्रत्येक प्रश्न का पहले एक उदाहरण दिया गया है। उदाहरण के अनुसार ही आप उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1 — आदेश— पहले आप एक ध्वनि सुनेंगें, उसके बाद मिलती-जुलती तीन ध्वनियाँ सुनेंगे। आप यह बतायेंगे कि उन तीनों ध्वनियों में वह ध्वनि है या नहीं।

उदाहरण— झ

छ, ज, च

प्रश्न 2 — आदेश— पहले आप एक ध्वनि सुनेंगें, उसके बाद मिलती-जुलती ध्वनिवाले तीन शब्द सुनेंगे। आप यह बतायेंगे कि उन तीनों शब्दों में वह ध्वनि किस नम्बर के शब्द में है।

उदाहरण— भ

बला, भला, फला

प्रश्न 3 — आदेश— आप दो-दो शब्द एक साथ सुनेंगें, बतायेंगे वे शब्द समान हैं या भिन्न।

उदाहरण—

बला— भला

प्रश्न 4 – आदेश— पहले आप एक शब्द सुनेंगे, उसके बाद तीन शब्द। बतायेंगे वह शब्द इनमें किस नम्बर पर है।

उदाहरण— ऐसा

ऐसा, अइसा, एसा

प्रश्न 5 – आदेश— पहले आप एक शब्द सुनेंगे, उसके बाद तीन शब्द। बतायेंगे उन तीनों में उसका अर्थ किस नम्बर पर है।

उदाहरण— शत्रु

दुश्मन, मित्र, झगडालू

उत्तर संकेत—

1. नहीं
2. दो
3. भिन्न
4. दो
5. एक

लेखन—बोध का अर्थ और महत्व

लेखन— बोध का अर्थ है भाषा में स्वीकृत लिपि —प्रतीकों के माध्यम से विचारों तथा भावों को अंकित करने की समझ। इसका तात्पर्य यह है कि लेखक द्वारा लिपिबद्ध विचारों तथा भावों को वे ही पढ़ और समझ सकते हैं, जिन्हें उस भाषा तथा उसकी लिपि—व्यवस्था की समुचित जानकारी है स्पष्ट है कि लेखन लिपि—प्रतीकों के माध्यम से विचारों तथा भावों की अभिव्यक्ति का साधन है। केवल वर्णियों की रचना अथवा शब्दों के अनुलेखन को लेखन नहीं कहा जा सकता। लेखन—व्यवस्था के विभिन्न घटकों से परिचित होना तथा लिपि—प्रतीकों के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति करना लेखन के आवश्यक अंग है। यही कारण है कि चित्रकार, पेन्टर तथा अंकित करने वालों को लेखन का ज्ञाता नहीं माना जा सकता। लेखन— बोध के लिए भाषा विशेष तथा उसकी लिपि—व्यवस्था की पर्याप्त जानकारी आवश्यक है।

रॉबर्ट लैडो के अनुसार अन्य भाषा में लेखन-कौशल सीखने से तात्पर्य लेखन-व्यवस्था के परम्परागत प्रतीकों को लिपि-बद्ध करना है जिन्हें लिखते समय लेखक ने मौन अथवा उच्चरित रूप से प्रयुक्त किया हो अथवा दोहराया हो। लेखन- बोध सिखाने का अर्थ छात्र को उस भाषा की लेखन-व्यवस्था से परिचित कराना है। इसमें भाषा की लिपि-व्यवस्था तथा उसकी विशिष्टताओं की जानकारी के साथ –साथ उस भाषा का पर्याप्त ज्ञान आवश्यक है तभी लिपि-प्रतीकों के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति संभव है। प्रत्येक भाषा की अपनी परम्परागत लेखन-व्यवस्था होती है इसमें वैयक्तिक अभिव्यक्ति के अनुसार परिवर्तन नहीं किया जा सकता हैं। अतः भाषा की अन्य विशिष्टताओं के साथ लिपि-प्रतीकों के रचना की योग्यता लेखन- बोध की प्रमुख विशेषता है। लेखन को भाषा का गोण कौशल एवं विचारों की आंशिक अभिव्यक्ति माना जाता है भाषा का उच्चरित रूप ही वस्तुतः पूर्ण माना जाता है। प्रत्येक भाषा की लेखन –व्यवस्था भिन्न होती है यही कारण है कि दो भाषाओं में समान लिपि –प्रतीकों का प्रयोग होने पर भी उनका मूल्य दोनो भाषाओं में भिन्न होता है। मातृभाषा तथा अन्य भाषा में लेखन सीखने के लिए भाषा से प्रयुक्त लिपि-प्रतीकों के आन्तरिक मूल्यों से परिचित होना आवश्यक है। इन मूल्यों से परिचित होने के साथ –साथ लेखन की कुशलता प्राप्त करना भी आवश्यक है। लेखन की कुशलता अभ्यास-जनित है। अभ्यास को आदत के रूप में परिणित करने पर ही लिपि-व्यवस्था पर अधिकार प्राप्त किया जा सकता है। लेखन-व्यवस्था का सतत अभ्यास करने तथा सजग रूप में उसका प्रयोग करने पर वह व्यवहार का सहज अंग बन जाती है, आदत के रूप में परिणित हो जाती है । इसके आधार पर ही लेखन – बोध का विकास सम्भव है। अतः छात्र में इस प्रकार की अभ्यास-जनित कुशलता उत्पन्न करना मातृभाषा तथा अन्य भाषा-शिक्षण का विशिष्ट उद्देश्य है। भाषा-शिक्षण के लिपि-बुद्ध प्रतीकों का मानव-सभ्यता के विकास में विशेष योगदान रहा है। इसके माध्यम से मानव-जाति की मान्यताएँ लिखित सामग्री के रूप में सुरक्षित रहती है और क्रमशः एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को संक्रमित होती हैं। मानव अपने पूर्वजों के जीवन उनके अदर्शों तथा जीवन-मूल्यों से लिपिबद्ध सामग्री के माध्यम से ही भली-भाँति परिचित होता है। उसके विकास की दिशाएँ इसके द्वारा ही प्रशस्त होती हैं।

अन्य भाषा में लेखन— बोध के विकास द्वारा अन्य भाषा— भाषी जन समुदाय के साथ विचारों आदान—प्रदान संभव होता है। इसके माध्यम से वह व्यापक क्षेत्र में अपने विचारों तथा भावों को सम्प्रेषित करने में समर्थ होता है। लेखन बोध के अभाव में विचारों की अभिव्यक्ति संभव नहीं है।

लेखन— बोध के माध्यम से छात्र का ज्ञान—क्षेत्र विस्तृत होता है। वह विविध प्रकार की सामग्री एवं विविध विषयों के संबंध में न केवल लेखन के आधार पर जानकारी प्राप्त करता है बल्कि अपने भावों विचारों को भी लिपिबद्ध करने की योग्यता अर्जित करता है। ज्ञानात्मक तथा भावात्मक सामग्री का गहन अध्ययन तथा तत्संबंधी विचारों की स्थायी अभिव्यक्ति की कुशलता लेखन के माध्यम से ही संभव है।

मातृभाषा तथा अन्य भाषा में लेखन— बोध का विकास भाव—प्रकाशन के स्थायी एवं व्यापक रूप का अधिकार प्राप्त करने का साधन है। लेखन भाव—प्रकाशन का व्यापक एवं शक्तिशाली माध्यम तथा भाषा सीखने का चरम सोपान है। इस कुशलता के विकास द्वारा अन्य भाषा के छात्र को अपने भावों तथा विचारों की अभिव्यक्ति का एक संबल साधन उपलब्ध होता है। लेखन— बोध साहित्यिक सृजन का मूल आधार है। लिपि—प्रतीकों के माध्यम से विचारों तथा भावों की शाश्वत अभिव्यक्ति साहित्य का रूप ग्रहण करती है। यद्यपि भाषा के मौखिक रूप द्वारा भी साहित्य सृजन होता है परन्तु वह अत्यन्त सीमित और देश—काल से नियंत्रित होता है। लेखन—बोध का महत्व इस दृष्टि से भी स्वतः स्पष्ट है कि प्रत्येक लेखन—व्यवस्था के साथ उसकी संस्कृति भी सम्बद्ध रहती है। लेखन—कौशल की महत्ता इस दृष्टि से स्वतः स्पष्ट है। अतः यह किसी समाज की आवश्यकता है। लेखन के माध्यम से लेखक पाठकों तक अपने विचारों तथा भावों को सम्प्रेषित कर सकता है। इतनी ही नहीं अपने उच्चतम रूप में यह सर्जनात्मक लेखन का भी एकमात्र माध्यम है। लेखन के माध्यम से ही वह अपने विचारों तथा भावों को साहित्यिक रचना के रूप में प्रस्तुत कर सकता है और अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा को विकसित कर सकता है। वस्तुतः लेखन— बोध का शिक्षण भाषाई कौशलों में विशेष महत्ता रखता है। इसका कारण यह है कि वार्तालाप तथा वाचन की तुलना में लेखन एक जटिल कौशल है। इसमें शैलीगत तत्व वार्तालाप की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है। वार्तालाप में विचारों

की मौखिक अभिव्यक्ति वक्ता की भाव-भंगिमा द्वारा अधिक स्पष्ट होती है। परन्तु लेखन में भाषा के चयनित प्रयोग के साथ ही साथ शैलीगत विशेषताएँ भी अपेक्षित हैं भाषा की संरचना और शब्द —भण्डार पर पर्याप्त अधिकार भी आवश्यक होता हैं। अतः लेखन — बोध को विविध कुशलताओं का समन्वित रूप माना जा सकता है।

अन्य भाषा में लेखन के माध्यम से विचारों की प्रभावी अभिव्यक्ति एक विशिष्ट कुशलता है। भाषा-शिक्षण में इस लक्ष्य की ओर छात्रों को निर्देशित करना शिक्षक का प्रमुख दायित्व है। वाचन की भाँति लेखन-शिक्षण में भी अध्यापक को विभिन्न स्तरों तथा विविध भाषाई पक्षों पर ध्यान देना पड़ता है। एक ओर उसे वर्णों की बनावट पर ध्यान देना पड़ता है। तो दूसरी ओर उनके संयोगों अथवा शब्दों की वर्तनी पर इसी के साथ सही वाक्य-संरचना तथा वाक्य में शब्दों के उपयुक्त चयन एवं विचारों की अभिव्यक्ति पर भी दृष्टि केन्द्रित करनी पड़ती है। अतः शिक्षण की दृष्टि से लेखन— बोध के विकास के मुख्य तीन स्तर माने जाते हैं। वर्ण, वर्तनी और रचना । इनका समन्वित विकास ही लेखन-बोध में वास्तविक कुशलता का द्योतक है। लेख में पाते हैं। विद्यार्थियों के बुरे लेख का एक कारण और भी है। अंग्रेजी और फरवरी के समान ही हम नगरी लिपि में भी शिकस्त (घसीट) लिखावट लाना चाहते हैं। यदि हम चाहते हैं कि विद्यार्थियों का लेख सुन्दर बनें तो हमें इस दूषित प्रवृत्ति को दूर करना होगा।

हमारे सामाजिक जीवन में रचनाकार अथवा लेखक का बड़ा महत्व है। समाज में दो व्यक्ति ही आदर प्राप्त करते हैं— एक वक्ता और दूसरा लेखक। परन्तु वक्ता का आदर तो केवल उसके जीवनकाल में होता है। उसकी मृत्यु के पश्चात जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, वैसे-वैसे लोग उसे भूलते जाते हैं, परन्तु रचनाकार अथवा लेखक अपनी रचनाओं द्वारा सदा जीवित रहता है। शिक्षा के क्षेत्र में प्रायः देखा जाता है कि परीक्षा में प्रश्न-पत्रों के उत्तर लेख के रूप में ही देने होते हैं और लेख के आधार पर ही विद्यार्थी अंक प्राप्त करता है। इस दृष्टि से रचना या लेखन को वर्तमान शिक्षा की पराकाष्ठा कहा जा सकता है। रचना वह सार्थक तथा कलात्मक अभिव्यक्ति है, जिसके द्वारा हम निश्चित उद्देश्यों को सामने रखकर अपने विचारों को लिपिबद्ध करते हैं।

लेखन कौशल का मूल्यांकन— लेखन कौशल का मूल्यांकन निम्न प्रकार के प्रश्नों द्वारा किया जा सकता है।

- **निबंधात्मक प्रश्न—** निबंधात्मक प्रश्न में छात्र अपने विचारों को विस्तृत रूप में व्याख्या करता है। जिससे उसके लेखन, पठन एवं श्रवण कौशल का मूल्यांकन होता है।
- **लघु उत्तर वाले प्रश्न—** लघुउत्तरीय प्रश्नों से छात्रों के बोध का मूल्यांकन किया जाता है।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न—** इसमें निम्न परीक्षणों को सम्मिलित किया जाता है—

अ. सूची मिलान परीक्षण

शब्द	अर्थ
पूर्व	व्याकुल
विकल	एक दिशा
वियोग	छाया
परछाई	विच्छटना

व. अनेक विकल्प परीक्षण

कालिदास एक राजनीतिज्ञ/नाटककार/ योद्धा थ।

स. सही गलत परीक्षण

- हिन्दुओं के धार्मिक ग्रंथ वेद हैं।
- आर्यों ने सुन्दर मन्दिर बनवाए।

द. रिक्त स्थान भरो

पाटलीपुत्रनदी किनारे स्थित है।

भारत में आक्रमणकारी.....से आए थे।

पठन बोध का अर्थ

(meaning of reading comprehension)

भाषा सीखने का स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक क्रम है— श्रवण, भाषण, पठन एवं लेखन। वस्तुतः यह भाषा सीखने के महत्वपूर्ण चार कौशल हैं। इन कौशलों में से वर्तमान वैज्ञानिक प्रतिस्पर्द्धात्मक व व्यवस्तता के युग में पठन बोध का विशेष महत्व है। तीन आर (थ्री आर—रेडिंग ,राइटिंग व रिथमोटिक) में भी पढ़ने का प्रथम स्थान है। पठन पर ही अन्य विषयों का ज्ञान निर्भर है। यथोचित पठन अभ्यास पर ही बालक की समस्त मानसिक ओर भावात्मक उन्नति आश्रित है।

केथरीन ओकानर के शब्दों में पठन वह जटिल अधिगम प्रक्रिया है। जिसमें दृश्य श्रव्य एवं गतिवाही सर्किटों का मस्तिष्क के अधिगम केन्द्र से संबंध निहित है।

पठन बोध के उद्देश्य (objective of reading comprehension)

पठन प्रक्रिया में मुख्यतः तीन सोपान सम्मिलित होते हैं—

1. वर्णमाला को पहचानना।
2. अर्थग्रहण करना।
3. पाठ्य-वस्तु में क्रमबद्धता लाना।

इस प्रक्रिया के अनुसार पठन बोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

1. ध्वनि के प्रतीक वर्णों को देखकर पहचानने की योग्यता होना।
2. ध्वनियों का उचित ज्ञान करवाना ताकि छात्र उचित उच्चारण स्थान से ध्वनि निकाल सकना।

(अ) प्रत्येक शब्द पर समुचित बल प्रदान करना।

(ब) विराम चिन्हों का ध्यान रखते हुए पठन करना।

3. सन्धि समास प्रत्यय व उपसर्ग सहित शब्दों का विश्लेषण करने की योग्यता होना।
4. आरोह अवरोह लय प्रति गति आदि का ध्यान रखते हुए भावूनूकूल वाचन करना।
5. वाचन मुद्रा को भावानुसार बनाने की क्षमता होना।

6. पुस्तक समुचित रीति से हाथ में पकड़ी जाए—इसका ज्ञान प्रदान करना—आँखों से 12 इंच की दूरी पर 45 अंश का कोण बनाते हुए बायें हाथ में पुस्तक ग्रहण की जाए।

पठन की आवश्यकता

(need for reading)

मौखिक अभिव्यक्ति या वार्तालाप करने के लिए व्यक्ति या व्यक्तियों का शारीरिक रूप में आमने-सामने उपस्थित होना आवश्यक होता है। परन्तु यह हमेशा संभव नहीं होता। हम कभी ऐसे व्यक्तियों के विचारों का भी जानना चाहते हैं जो मृत्यु का ग्रास बन चुके हैं। कभी हमें इस बात की भी आवश्यकता पड़ती है कि उन व्यक्तियों के बारे में जानकारी प्राप्त की जाए जो इस संसार में हैं लेकिन उनसे मिलना संभव नहीं हो पाता। इस प्रकार की परिस्थिति में यदि उस व्यक्ति के विचार हमें लिखित रूप में प्राप्त हो जाता है। तो उन्हें पढ़कर हम उस व्यक्ति के विचारों से अवगत हो सकते हैं। किन्तु यह बात सभी संभव हो सकती है जब हम पढ़ना जानते हों। इस लिए ज्ञान प्राप्ति के लिए किसी भी प्रकार की लिखित सामग्री को पढ़ने के लिए वाचन की शिक्षा ग्रहण करना आवश्यक है।

पठन बोध का महत्व

(importance of reading comprehension)

1. पठन बोध से छात्रों का उच्चारण शुद्ध होता है।
2. ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है। छात्र सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान घर बैठे ही प्राप्त कर सकता है।
3. स्वतः अर्थग्रहण करने की क्षमता विकसित होती है।
4. व्यक्तित्व का सर्वोत्तम विकास होता है।
5. सृजनात्मक शक्ति का विकास होता है।
6. अभिव्यक्ति सशक्त होती है।
7. शब्द भण्डार में वृद्धि होती है।
8. छात्रों में सद्वृत्तियों का विकास होता है।
9. पठन योग्यता के विकास से भाषा के अन्य कौशलों का भी विकास होता है, जैसे—लेखन, मौखिक अभिव्यक्ति, अर्थग्रहण आदि।
10. अवकाश का सदुपयोग होता है।
11. छात्र सजग रहता है।

पठन के आधार (basis of reading)

पठन के दो प्रमुख आधार होते हैं—

1. **पठन मुद्रा**—पठन मुद्रा के अन्तर्गत पुस्तक को हाथ से पकड़ना उचित मुद्रा में बैठकर अथवा खड़े होकर पढ़ना पढ़ते समय नेत्र तथा अन्य अंगों का संचालन करना आदि आते हैं।

2. **पठन शैली**—पठन शैली के अन्तर्गत अक्षर—अभिव्यक्ति शब्दोच्चारण सस्वरता बल, विराम, लय, यति—गति तथा प्रवाह आदि आते हैं।

शुद्ध एवं प्रभावी तथा प्रवाहपूर्ण पठन श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करके वाचक के व्यक्तित्व को निखार देता है एवं वक्ता का प्रभाव श्रोताओं पर पड़े बिना नहीं रह सकता।

अच्छा सस्वर पठन वार्तालाप के समय वार्तालाप को रुचिकर बना सकता है। कभी—कभी शैक्षिक बातचीत के समय महान व्यक्तियों के उद्धरण पढ़ने की आवश्यकता पड़ सकती है। ऐसे समय यदि वाचक अच्छा न हुआ तो वार्तालाप का मजा किरकिरा हो जायेगा।

शैक्षिक परिसंवाद सेमिनार कार्यगोष्ठी सम्मेलन आदि में अच्छे सस्वर वाचन का अपना पृथक—महत्व है। इन स्थानों पर यदि कुछ पढ़ना पड़ा और सदस्य ने सुन्दर ढंग से न पढ़ा तो उसकी बात का प्रभाव कम हो जाता है।

सामाजिक उत्सवों, पास—पड़ोस के पारिवारिक उत्सवों एवं धार्मिक कृत्यों के समय रामायण, महाभारत, आल्हा आदि काव्यों का पाठ करने की शिक्षित व्यक्ति को आवश्यकता पड़ सकती है। और वाचन की कला में अनुशल व्यक्ति ऐसे अवसरों पर बगलें झोंकने लगता है।

उत्तम सस्वर वाचन में वाचक में आत्मविश्वास जागृत होता है, उसके भाषा—प्रयोग की क्षमता में वृद्धि होती है, औपराचिक अवसरों पर उसकी झिझक दूर हो जाती है और उसमें नेतृत्व के गुणों का विकास होता है। अच्छी तरह पढ़ी हुई कविता को याद करने में सरलता होती है।

सस्वर वाचन में बड़ी कुशलता की आवश्यकता है। बालकों के उच्चारण में विराम, बालाघात संबंधी भूल नहीं होनी चाहिए। भूल करने से आदत चिरस्थायी हो जाती है और सस्वर पाठ का उद्देश्य भी नष्ट हो जाता है, परन्तु जब बालक सस्वर वाचन कर रहा हो तो पढ़ना रोककर संशोधन करने की शीघ्रता नहीं करनी चाहिए। इससे पढ़ने की गति में रुकावट आ जाती है। प्रवाह के साथ पढ़ने की आदत नहीं पड़ पाती। विषय संबंध टूट जाने से शुद्ध पाठ कठिन हो जाता है। अतः अवतरण समाप्त हो जाने पर शुद्ध करना चाहिए। एक उद्देश्य पूर्ति के लिए दूसरे की बलि देना उचित नहीं। सस्वर वाचन के द्वारा छात्रों में निम्नलिखित योग्यताओं का विकास करना शिक्षक का लक्ष्य होना चाहिए—

(क) विराम आदि चिन्हों का समुचित ध्यान रखने हुए पढ़ना।

(ख) शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण के साथ पढ़ना यथा—श, स, छ, च्छ, ध, द्ध, स्थ, स्न की शुद्धता का ध्यान रखता। ई, ई, उ, ऊ, ए, ओ, औ की मात्रायुक्त ध्वनियों की शुद्धता का भी ध्यान रखना।

(ग) उचित बल और आरोह—अवरोह के साथ पढ़ना।

(घ) भावनुरूप अवसर के अनुकूल पढ़ना।

(ङ) श्रोताओं की संख्या एवं अवसर के अनुसार वाणी को नियंत्रित करना।

(च) उच्चारण एवं सुर में स्थानीय बोलियों का प्रभाव न आने देना।

पठन बोध के गुण

उत्तम पठन बोध के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सतत प्रयास की आवश्यकता है। यदि ये उद्देश्य प्राप्त हो जाते हैं। तो वाचन अच्छा कहा जाएगा अन्यथा वह अच्छा नहीं कहा जा सकता। अतः यह कहा जा सकता है कि उत्तम पठन बोध के लिए निम्नलिखित गुण आवश्यक हैं —

(क) ध्वनियों का ज्ञान—बालक को विभिन्न ध्वनियों का ज्ञान होना चाहिए और समान ध्वनियों में भेद करने की सामर्थ्य होनी चाहिए।

(ख) उच्चारण की शुद्धता— प्रसन्न विशेष, भारतीय, सौष्ठव, क्रम, कर्म, कृमि जैसे शब्दों का उच्चारण शुद्धता से किया जाए तो वाचन अच्छा कहा जायेगा।

(ग) उपयुक्त बालघात— आवश्यकता, जनता, करना, धरना आदि शब्दों के उच्चारण में रेखांकित ध्वनियों को आधा कर देना या लुप्त कर देना ठीक नहीं। कमल, कलम जैसे शब्दों में रेखांकित अक्षरों पर बालघात है और आगे का अक्षर के रूप में उच्चारित होता है। अच्छा वाचक उपयुक्त बालघात का ध्यान रखता है।

(घ) विराम चिह्न—वाचन स्पष्ट विराम अर्द्ध विराम एवं पूर्ण विराम का ध्यान रखकर पढ़ना चाहिए। मारो मत जाने दो वाक्य में यदि मारो के बाद विराम न करके पढ़े तो एक अर्थ होगा और मत के बाद विराम करके पढ़े तो एक अर्थ होगा और मत के बाद विराम करके पढ़े तो दूसरा अर्थ होगा।

(ङ) स्पष्टता—वाचन में प्रवाह का ध्यान रखा जाय। गति पर नियंत्रण आवश्यक है। इतनी जोर से पढ़ना चाहिए कि सभी श्रोता सुन लें। शब्दों के समूहों को एक सांस में पढ़ते उनमें अर्थ की संगति का ध्यान रखा जाये। प्रत्येक वर्ण का उच्चारण प्रथक रूप में ही किया जाए।

(छ) अर्थ की प्रतीति— सुन्दर वाचन वह है जो पढ़ते समय शब्दों का अर्थ ग्रहण करके चलता है। यदि गति, लय, उच्चारण, विराम, आदि का ध्यान रखकर वाचन किया जा रहा है तो अर्थ की प्रतीति स्वाभाविक रूपमें होती चलेगी।

(ज) स्वर में रसात्मकता—अच्छा वाचक मुँह से प्रत्येक ध्वनि को निकालते समय कर्कश ढंग से नहीं पढ़ता नह ही उसमें रूखापन रहता है वरन मधुरता के साथ सरल ढंग से शब्दों का उच्चारण किया जाता है। दुःखपूर्ण विषय—सामग्री को पढ़ते समय वीर —रस का ओज वाचन इवीभट ढंग से नहीं होना चाहिए।

(झ) वाचन की मद्रा—वाचन करते समय अच्छा वाचक आनावश्यक ढंग से सिर नहीं हिलाता हाथ नही पटकता मेज नहीं पीटता उँगलियों को नहीं नचाता पैर से तबला नहीं बजाता पुस्तक को विकृत ढंग से नहीं पकड़ता और न झुककर पढ़ता है न अकड़कर ।

(ञ) रूचि—पढ़ते समय अच्छा वाचक पढ़ने में रूचि लेता है। उसे वाचन में आनन्द आता है उसकी रूचि को देखकर श्रोता भी आनन्द लेते है। वाचन में उसे न तो ऊब जाती है न ही इसे वह व्यर्थ का कार्य समझकर चलता है।

सस्वर वाचन के भेद—सस्वर वाचन के गुण के आधार पर इसके निम्नलिखित दो भेद किये जा सकते है—

1. छात्रों द्वारा आदर्श वाचन
2. छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन।

बालकों के समक्ष पाठ्य—सामग्री को जब अध्यापक स्वयं करके प्रस्तुत करता है तो उसे आदर्श वाचन कहते है। आदर्श वाचन के निम्नलिखित उद्देश्य है—

(क) छात्रों को समक्ष वाचन का एक मानदण्ड उपस्थित करना।

(ख) छात्रों को यह समझाना कि उन्हें कहां तक पढ़ना है।

(ग) अपरिचित पाठ्य—सामग्री का छात्रों को प्रथम परिचय देना।

(घ) छात्रों के मन में व्याप्त झिझक को दूर करना।

(ङ) छात्रों को उचित गीत, विराम, उच्चारण, स्पष्टता आदि का ध्यान रखते दहुए वाचन करने की प्रेरणा देना।

आदर्श वाचन के पश्चात छात्रों द्वारा अनुकरण किया जाता है। जब छात्र अध्यापक द्वारा किये गये वाचन के ढंग पर वाचन करने का प्रयास करते हैं तो उसे अनुकरण वाचन कहा जाता है। अनुकरण वाचन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

1. शिक्षक द्वारा किये गये आदर्श वाचन का अनुकरण करना।
 2. उच्चारण को शुद्ध बनाना।
 3. पाठ के भाव के अनुसार वाचन करने की क्षमता प्राप्त करना यथा—दुख में भारी स्वर से वीर —रस की सामग्री में उच्च स्वर के श्रृंगार में स्नेहयुक्त मधुर स्वर से करुण रस में दयार्द्र स्वर से तथा भक्ति रस में शान्त एवं गंभीर स्वर से वाचन करने की योग्यता प्राप्त करना।
1. वाचन में गति एवं प्रवाह का ध्यान रखना
 2. वाचन करते समय अर्थ ग्रहण की योग्यता का विकास करना।

वाचन में बालक अनेक अशुद्धियाँ करते हैं। वर्ण शब्दों तथा वाक्यों का शुद्ध उच्चारण स्वयं करके उनका अनुकरण वाचन कक्षा के विद्यार्थियों से करा लेना चाहिए। आदर्श पाठ में ध्वनि का आरोह—अवरोह शुद्ध उच्चारण भावभिव्यक्ति एवं उपयुक्त शारीरिक संकेतों को ध्यान रखकर अध्यापक को वाचन करना चाहिए। क्योंकि वाचन पर ही पाठ ही सफलता निर्भर रहती है।

इससे अतिरिक्त सस्वर पाठ से छात्रों में आत्मविश्वास की भावना आती है। संकेत का आवरण हट जाता है। सस्वर वाचन से ही काव्य का आनन्द उठाया जा सकता है, लेकिन प्रभावशाली सस्वर वाचन तभी कहा जा सकता है जबकि वाचन में निर्णय की कशलता, उच्चारण की शुद्धता तथा भाव की स्पष्टता हो।

मौन वाचन

(silent reading)

लिखित सामग्री का बिना कोई ध्वनि हुए मन—ही मन में शान्तिपूर्वक पढ़कर अर्थ ग्रहण करने की क्रिया को मौन वाचन कहते हैं। वास्तव में मौन वाचन पठन की ऐसी प्रक्रिया है। जिसमें दृष्टि विराम के माध्यम से वाचन मन—ही मन में किया जाता है। इसमें नेत्रों के द्वारा वाचन

सामग्री तीव्रता से पढ़ी जाती है। इसमें वाचन मानसिक धरातल पर होता है और मस्तिष्क तेजी से अर्थ ग्रहण करता है। इसमें वाचन करने वाले के होंठ तक भी नहीं हिलते। मौन वाचन के बारे में **रायबर्न** लिखते हैं। आरंभ में ही बालकों को प्रशिक्षित करना चाहिए कि वे अपने पाठ करते हुए वे होठों को ना हिलाएँ अन्यथा मौन वाचन सस्वर वाचन का ही रूप बनकर रह जाएगा और बालक कभी भी अपनी आँखों से पढ़ना नहीं सीखेगा।

मौन वाचन की उपयोगिता – वाचन (पठन) के व्यापक एवं विस्तृत क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए पहला सोपान सस्वर वाचन के रूप में होता है। परन्तु वास्तविक जीवन में विद्यालय की शिक्षा के बाद सस्वर वाचन की बहुत कम आवश्यकता होती है। अधिकांश रूप से हमें मौन पर ही निर्भर रहना पड़ता है। हम किसी भी सार्वजनिक क्षेत्र (स्थान) में सस्वर वाचन नहीं कर सकते , क्योंकि ऐसा करना न तो स्वयं को अच्छा लगता है और न ही दूसरों को अच्छा लगता है।

मौन वाचन की वास्तविक जीवन में बहुत उपयोगिताएँ हैं जो निम्न हैं—

1. मौन वाचन तीव्र गति से होता है, इसलिए समय की बचत होती है।
2. मौन वाचन से थकावट कम होती है।
3. मौन वाचन से कम थकावट होने के कारण छात्र अधिक देर तक वाचन कर सकता है।
4. छात्र में एकाग्रता का विकास होता है।
5. अर्थ ग्रहण तीव्रता से किया जाता है।
6. गहन एवं विस्तृत अध्ययन साथ-साथ होता है।
7. संक्षेपीकरण में सहायक है।
8. स्वाध्याय क आदत का विकास करने में पूर्ण रूप से सहायक है।
9. समय के सदुपयोग के लिए बहुत सार्थक एवं सशक्त प्रक्रिया है।
10. गहन (सूक्ष्म) अध्ययन में बहुत सहायक है।
11. कम समय में अधिक ज्ञान की प्राप्ति होती है।
12. मौन वाचन सार्वजनिक स्थानों पर दूसरों की उपस्थिति में भी संभव है।

मौन पठन के प्रकार

(types of silent reading)

पठन की प्रकृति के अनुसार मौन पठन के दो भेद किये जा सकते हैं—

1. गंभीर पठन अथवा गहन पठन।
2. द्रुत पठन।

1. गंभीर पठन अथवा गहन पठन— बेकन के द्वारा—कुछ पुस्तकें गहन अध्ययन की दृष्टि से पढ़ी जाती हैं, कुछ केवल निगल ली जाती हैं और कुछ केवल स्वाद के लिए पढ़ी जाती हैं

बेकन के उपयुक्त कथन से भी स्पष्ट होता है कि मौन पठन के दो प्रकार हैं—

- (i) गंभीर पठन
- (ii) गहन पठन।

गंभीर अथवा गहन पठन उस विषयवस्तु का किया जाता है जो सारगर्भित तथ्यात्मक तथा क्लिष्ट भाषा में बुद्धि होती है जिसमें अधिक चिन्तन की आवश्यकता होती है। उदाहरण माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर पर चलने वाली भाषा की पाठ्यपुस्तकों के पठन हेतु छात्रों को गहन पठन करने का अभ्यास करवाया जाना चाहिए।

2. द्रुत पठन—द्रुत पठन जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि शीघ्रता से किया जाने वाला पठन। इसमें विषयवस्तु सरल व बोधगम्य होती है। उसका उद्देश्य छात्रों का मनोरंजन करना, अवकाश के क्षणों का सदुपयोग करना व सीखी हुई भाषा का अभ्यास करवाना है, जैसे संस्कृत की वे कथाएँ जो हितोपदेश व पंचतंत्र आदि में संग्रहित हैं तथा संस्कृत में निकलने वाली पत्रिकाएँ जैसे—चंदामामा सम्भाषण संदेश आदि का द्रुत पठन करने के लिए छात्रों को प्रेरित किया जाना चाहिये। मौन पठन की उपयोगिता केवल छात्र जीवन तक ही सीमित नहीं है अपितु यह जीवन—पर्यन्त चलने वाली शिक्षा के लिए भी व्यवहारिक है।

मौन पठन कब करवाया जाए—प्रारंभिक स्तर पर सस्वर वाचन ही अधिक उपयुक्त होता है जैसे—जैसे बालक शारीरिक व मानसिक रूप से परिपक्व होता जाता है वैसे—वैसे उसमें स्वाध्याय की आदत का विकास होता है वह मन में पढ़कर विषय की ओर अपना ध्यान

केन्द्रित कर सकता है। इस विषय में जुड़ (jude) ने कहा है— अध्यपकों को यह बात अच्छी प्रकार से समझ लेनी चाहिए कि उच्च कक्षाओं में वचन की सबसे अच्छी विधि मौन वाचन ही है। जब कोई बालक चलना सीखता है तब खिसकना छोड़ देता है।

वह मौन वाचन में निपुणता प्राप्त कर लेता है तब सस्वर वाचन की आदत छोड़ देता है।

मौन पठन कैसे कराया जाए?

1. मौन पठन हेतु सर्वप्रथम वातावरण को पूर्ण शांत बनाया जाए।
2. छात्रों में ध्यान केन्द्रित करने की आदत डाली जाए।
3. इसका नियमित अभ्यास करवाया जाए।
4. उपयुक्त पाठ्य-सामग्री का चयन किया जाए जैसे—सामाजिक, सांस्कृतिक
5. मौन पठन से पूर्व छात्रों को कहाँ तक पढ़ना है? किन बिन्दुओं पर अधिक ध्यान केन्द्रित करना है—यह स्पष्ट कर दिया जाए।
6. मौन पठन प्रारंभ करवाने के लिए शिक्षक कक्षा का चुपचाप निरीक्षण करें।
7. जिस अवतरण का मौन पठन करना है उसका सस्वर पठन एक बार कक्षा में अवश्य करवा दिया जाए।
8. उस विषयवस्तु के क्लिष्ट शब्दों के अर्थ, मुख्य भाव तथा लेखक के आशय की अनुभूति पूर्व में ही स्पष्ट कर दी जाए।
9. वाच्यार्थ के साथ लक्ष्यार्थ एवं व्यंग्यार्थ का ज्ञान करना दिया जाए।
10. मौन पठन का अभ्यास जब कुछ परिपक्व होने लगे उस समय छात्रों को पहले की अपेक्षा कम समय देकर उतने ही समय में अधिक मात्रा में पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

पठन बौध का मूल्यांकन

प्रश्न 1 आदेश— दिया हुआ अंश जिस शब्द में है, उस शब्द को पढ़िए—

उदाहरण— स्ट

सटा, स्तन, मास्टर, स्पष्ट

प्रश्न 2 आदेश— दिय हुआ वर्णों से बनने वाले शब्दों का वाचन करिए—

उदाहरण— भरत

रात, भारी, तरसना, भारत

प्रश्न 3 आदेश— दिय हुआ शब्दों के विलोम शब्दों का वाचन करिए—

उदाहरण— कम—बहुत, बड़ा—छोटा, थोड़ा—अधिक

प्रश्न 4 आदेश— दिये हुए वाक्यों में वाक्यों में सही वाक्य पर निशान लगाए—

उदाहरण— क. मेरे परिवार में अनेक सदस्य हैं।

ख. मेरी परिवार में अनेक सदस्य हैं।

ग. मेरा परिवार में अनेक सदस्य हैं।

अभ्यास के लिए क्रियाकलाप 3.1

ईमानदारी का फल विषय पर एक संक्षिप्त कहानी लिखो—

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

अपनी प्रगति की जाँच करें

निर्देश: अ) अपने उत्तर प्रत्येक प्रश्न के बाद दिए गए रिक्त स्थान में लिखें।

व) अपने उत्तरों की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से करें।

प्रश्न-1 पठन बोध से क्या समझते हो ?

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 शब्दकोष

शब्द – अक्षरों अथवा वर्णों के समुदाय विशेष को **शब्द** कहते हैं।

भाषा वैज्ञानिक शब्द को स्वतंत्र चरम वाक्य मानते हैं। व्याकरण की दृष्टि से स्वतंत्र ध्वनि ही शब्द है।

संस्कृत में शब्द के लिये पद या पाद का प्रयोग भी होता है।

शब्द का महत्व

भाषा की दृष्टि से शब्द का बड़ा महत्व है। आदिम युग से लेकर अर्वाचीन युग तक व्यक्ति जो कुछ ज्ञान ग्रहण कर पाया है वह शब्दों के रूप में ही आज विश्व के सामने संचित तथा सुरक्षित है। भावों की अभिव्यक्ति का एकमात्र साधन शब्द ही है वक्ता या लेखक अपने शब्दकोष के बल पर ही मैदान मार लेता है। शब्द भाषा के क्रमिक विकास की रूपरेखा है, लेखक की शक्ति है तथा व्याकरण और भाषा-विज्ञान का प्राण है। किसी भाषा का ज्ञान तब

तक अधूरा है, जब तक उस भाषा में प्रयुक्त शब्दों का पूरा-पूरा ज्ञान न हो। किसी समाज अथवा राष्ट्र के इतिहास की जानकारी प्राप्त करनी हो तो उसकी भाषा का ज्ञान प्राप्त करना होगा। यदि किसी भाषा की गंभीरता और हल्केपन का पता लगाना हो तो उसकी शब्दावली पर दृष्टि डालनी होगी। इन सभी बातों के आधार पर हम कह सकते हैं कि शब्द भाषा की निधि है।

महाभारत के शान्तिपूर्ण में श्वेतकेतु द्वारा शब्द ही परिभाषा का उल्लेख है कल्पयेन च वर्णानाम परिवादकृतो हि यः स शब्द इति विज्ञेय अर्थात् वर्णों के आगे-पीछे जोड़ने से बोलने का जो प्रकार किया जाता है, वह शब्द होता है।

शब्दों के भेद

ध्वनि संबंधी भेद

ध्वनि की दृष्टि से शब्दों के दो भेद होते हैं—

- ध्वन्यात्मक शब्द
- वर्णात्मक शब्द।

जो शब्द स्पष्टतापूर्वक सुनाई नहीं देते और न स्पष्ट रूप ने समझ में ही आते हैं ऐसे शब्दों को ध्वन्यात्मक शब्द कहते हैं। जो शब्द प्रथक—प्रथक अक्षरों से प्रथक—प्रथक रूप से सुनाई देते हैं उन्हें वर्णात्मक शब्द कहते हैं। मानव-जीवन की दृष्टि से ध्वन्यात्मक शब्दों की अपेक्षा वर्णात्मक शब्दों का महत्व अधिक है।

अर्थ संबंधी भेद

अर्थ की दृष्टि से शब्दों के दो भेद किए जा सकते हैं—

- (1) सार्थक शब्द
- (2) निरर्थक शब्द

साहित्यिक भाषा का संबंध केवल सार्थक शब्दों से ही रहता है, निरर्थक से नहीं। सार्थक शब्दों में भाव और विचार की एक प्रतिमा निहित रहती है। उन शब्दों के उच्चारण मात्र से प्रतिमा के संस्कार उदबुद्ध हो उठते हैं।

शब्द-शक्तियाँ

शब्दों की तीन शक्तियाँ निर्धारित की गई हैं—

- (1) अभिधा,
- (2) लक्षणा, तथा
- (3) व्यंजना।

जिस व्यक्ति के द्वारा शब्द के वाच्यार्थ का बोध होता है, उसे अभिधा कहते हैं। वाचक शब्द तीन प्रकार के होते हैं—

(क) रूढ़ , (ख) यौगिक, (ग) योग रूढ़।

जिन शब्दों के खण्ड का कोई अर्थ न निकले, उन्हें रूढ़ शब्द कहा जाता है यथा—श्याम, जल, पैसा आदि।

यौगिक शब्दों का पूर्ण बोध उनके अवयवार्थ से होता है जैसे—राकेश यौगिक शब्द है। इसके दो अवयव राका और ईश है। इसका अर्थ हुआ—राका (रात्रि) का स्वामी अर्थात्—चन्द्रमा।

योग रूढ़ शब्दों में हमें यौगिक और रूढ़—दोनों ही शब्दों की शक्तियों का सम्मिश्रण प्राप्त होता है यथा—लम्बोदर शब्द का यौगिक अर्थ हुआ—लम्बे उदर वाला। परन्तु यह शब्द गणेश जी के लिए रूढ़ हो चुका है। लम्बोदर शब्द सुनते ही हमारे मन में गणेश जी का चित्र आ जाता है। पंकज तथा जलज शब्द भी योग—रूढ़ हैं।

जिस शक्ति के द्वारा लक्ष्यार्थ का बोध होता है, उसे लक्षणा कहते हैं यथा— मैं जयशंकर प्रसाद का अध्ययन कर रहा हूँ। इस वाक्य में जयशंकर से तात्पर्य—उनका साहित्य है। जिनका अध्ययन किया जा रहा है। यहाँ जयशंकर प्रसाद का साहित्य यह लक्ष्यार्थ है।

जिस शक्ति के द्वारा के व्यंग्यार्थ का बोध होता है, उसे व्यंजना कहते हैं जैसे यदि कोई कहे कि कल तुम्हारी कोठी में रात भर कुत्ता भोंकता रहा तो इसका व्यंग्यार्थ निकलता है, कि शायद चोर गए हों इसलिए सावधानी की आवश्यकता है।

रूपान्तर के आधार पर शब्द — भेद

रूपान्तर के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं—

- (1) विकारी,
- (2) अविकारी

जो शब्द लिंग, कारक तथा वचन आदि के प्रभाव से अपना रूप परिवर्तित कर लेते हैं, उन्हें **विकारी** शब्द कहते हैं। विकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं— संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया।

जिन शब्दों पर लिंग, वचन तथा कारक आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, उन्हें **अविकारी** शब्द कहते हैं अविकारी शब्द भी चार प्रकार के होते हैं— क्रिया विशेषण, संबंध, समुच्चय बोधक तथा विस्मयादि बोधक।

शब्द—ज्ञान कैसे प्राप्त होता है।

शब्दों का ज्ञान हमें तीन प्रकार से प्राप्त होता है—

- (1) उच्चारण करने से (2) सुनने से (3) देखने से।

यद्यपि अपनी—अपनी जगह पर उच्चारण—ज्ञान, श्रवण—ज्ञान तथा चक्षु—ज्ञान—इन तीनों का महत्व है, परन्तु फिर भी चिन्तन का निखरा रूप उच्चारण—ज्ञान में ही माना जाता है।

हिन्दी की शब्द-सूची

हिन्दी की शब्द-सूची को हम तीन प्रमुख वर्गों में विभाजित कर सकते हैं—

1. आर्य-भाषाओं से आए हुए शब्द,
2. प्रान्तीय भाषाओं से प्राप्त शब्द-समूह, तथा
3. विदेशी भाषाओं से आए हुए शब्द।

1. आर्य-भाषाओं से आये हुए शब्द

आर्य-भाषाओं से आए हुए शब्द अग्रांकित तीन प्रकार के हैं—

- **तत्सम**— जो शब्द संस्कृत से विशुद्ध रूप से अपना लिए गए हैं उन्हें तत्सम कहते हैं यथा—उषा, अग्नि, मित्र, कृषि, रात्रि, वायु, जगत, कर्म इत्यादि। गंभीर साहित्य में तत्सम शब्दों का ही अधिक प्रयोग होता है। हिन्दी साहित्य में जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, चतुरसेन शास्त्री आदि ने अपनी कृतियों में तत्सम शब्दों का ही अधिक प्रयोग किया है।
- **अर्द्ध तत्सम**— संस्कृत के जो शब्द प्राकृत-युग में अपना रूप बदल कर आज किसी में कुछ परिवर्तन के साथ प्रयोग में लाए जाते हैं उन्हें अर्द्ध-तत्सम कहा जाता है यथा—कारज (स.कार्य) पिरेम (स. प्रेम) अच्छर (स. अक्षर)
- **तदभव**—जो शब्द सीधे संस्कृत से न लिए जाकर मध्यकालीन भाषाओं में से होते हुए आए हैं, ऐसे शब्दों को व्याकरण में तदभव कहते हैं यथा—आग, खेत, काम आदि। मुन्शी प्रेमचन्द्र ने अपनी कहानियों, उपन्यासों में तदभव शब्दों का अधिक प्रयोग किया है।

उपयुक्त तीन प्रकार के शब्द हिन्दी में पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं।

2. प्रान्तीय भाषाओं के शब्द

हिन्दी भाषी प्रदेशों तथा अन्य प्रान्तों में बराबर सम्पर्क रहा है। इस सम्पर्क के आधार पर हिन्दी ने अन्य प्रान्तीय भाषाओं के अनेक शब्दों को ग्रहण कर अपना कोश बढ़ाया है। यहाँ कुछ ऐसे शब्द दिए जा रहे हैं—

- बंगाल से आए शब्द —गल्प, उपन्यास आदि ।
- मराठी से आए शब्द—लागू, बाजू आदि ।
- विदेशी भाषाओं से आए शब्द

भारतवर्ष पर मुसलमान तथा अंग्रेज —दो विदेशी जातियों का राज्य रहा। उनके सम्पर्क से हिन्दी में अरबी, फारसी, तुर्की तथा अंग्रेजी पुर्तगाली भाषा से कई शब्द आये हैं।

इनके शब्दों में से कुछ नीचे दिए जा रहे हैं—

- अरबी भाषा से आये शब्द—फुरसत, हकीम, हुक्म, सिफारिश, एतराज, अजनबी, मुकदमा, हिकमत, अदालत, हक, माल —असबाब इत्यादि ।
- तुर्की भाषा से आये शब्द— बावर्ची, तोप, उर्दू तमगा, लाश, कुमुक, काबू, अलमारी, कालीन इत्यादि ।
- फारसी भाषा से आये शब्द— निशान, दोस्ती, फुरसत, दुकान, दमा, गुल, आदमी, शर्म, होश, गुलकन्द, रास्ता, अरमान, दरबारी, कमर, चाकू, गुलेदान, शमा इत्यादि ।
- अंग्रेजी भाषा से आये शब्द—सिनेमा प्रेस, टिकिट, एसेम्बली, रेल, स्टेशन, पेन्सिल, स्कूल, मास्टर, रजिस्टर, चेक, इंच, फुट, फंड, क्रिकेट, बालीवाल, पेन, पिन, स्टूल, रेडियो, ग्रामोफोन, शर्ट आदि ।

अभ्यास के लिए क्रियाकलाप 3.2

तत्सम, अर्द्ध तत्सम, तदभव शब्दों के पॉच-पॉच उदाहरण लिखो —

स	तत्सम	अर्द्ध	तदभव
---	-------	--------	------

क्र		तत्सम	
1	मित्र	अच्छर	आग
2			
3			
4			
5			
6			

अपनी प्रगति की जाँच करें

निर्देश: अ) अपने उत्तर प्रत्येक प्रश्न के बाद दिए गए रिक्त स्थान में लिखें।

व) अपने उत्तरों की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से करें।

प्रश्न-2 शब्द का क्या महत्व है ?

.....

.....

.....

.....

.....

3.5 व्याकरण

व्याकरण

व्याकरण वह शास्त्र है जो भाषा से संबंधित नियमों का ज्ञान कराता है। किसी भाषा की संरचना का सिद्धांत अथवा नियम ही उसका व्याकरण है। यदि नियमों द्वारा भाषा की

स्थिति न रखा जाए तो उसकी उपादेयता, महत्ता तथा स्वरूप ही नष्ट हो जायेगा। अतः भाषा के शीघ्र परिवर्तन को रोकने के लिए ही व्याकरण का उस पर नियंत्रण कर दिया गया है। भाषा यदि साध्य है तो व्याकरण उसका साधन है। व्याकरण भाषा का अनुशासन मात्र ही करता है, शासन नहीं। वह भाषा का सृजन साधन है। व्याकरण भाषा का सृजन नहीं परिष्कार करता है।

1. पतंजलि ने महाभाष्य में व्याकरण (शब्दानुशासन) कहा है।
2. डा. स्वीट के अनुसार व्याकरण भाषा का व्यवहारिक विश्लेषण अथवा उसका शरीर विज्ञान है।
3. जैगर महोदय के अनुसार प्रचलित भाषा संबंधी नियमों की व्याख्या ही व्याकरण है।

व्याकरण के तत्व

व्याकरण की शिक्षा भाषा का आवश्यक अंग है। यह भाषा रूपी रथ का सारथी है। यह भाषा का स्वरूप बनाता है तथा उस पर नियंत्रण रखता है। यह उसे सच्चे रास्ते पर चलाने के लिए प्रेरणा प्रदान करता है। भाषा की इकाई वाक्य, वाक्य की इकाई शब्द अथवा पद और शब्द की इकाई का वर्ण है। अतः किसी भी भाषा के स्वरूप को समझाने के लिए उसके वर्ण, शब्द और वाक्य इन तीनों के स्वरूप को समझना होता है। किसी भी भाषा के व्याकरण के ये ही तीन मूल तत्व होते हैं और इन तीनों का क्रमशः ध्वनि विज्ञान, शब्द विज्ञान और वाक्य विज्ञान के अन्तर्गत अध्ययन किया जाता है। इन तीनों के अध्ययन के लिए पिछले पाठों का अवलोकन करें।

हिन्दी में व्याकरण शिक्षण का स्थान एवं महत्व

- भाषा संबंधी अशुद्धियों को समझने के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है।
- भाषा की अशुद्धियाँ व्याकरण की जानकारी प्राप्त करके ही दूर की जा सकती हैं।
- व्याकरण की सहायता से वर्ण रचना, शब्द रचना तथा वाक्य रचना एवं भाषा संबंधी व्यवस्था तथा नियमों का ज्ञान प्राप्त होता है।

- शुद्ध उच्चारण, वाक्य रचना, विराम चिन्हों आदि के लिए व्याकरण के ज्ञान की आवश्यकता होती है।
- भाषा संबंधी ज्ञान के लिए व्याकरण की शिक्षा आवश्यक है। भाषा का सामान्य ज्ञान हो जाने पर ही व्याकरण की शिक्षा दी जानी चाहिए।
- व्याकरण ज्ञान के कारण शिक्षक छात्रों की भाषा संबंधी त्रुटियों को पूर्ण विश्वास से सहायता पहुँचाता है।
- व्याकरण के ज्ञान से बालक शुद्ध लिखना व बोलना ही नहीं सीखेगा वरन उसमें अलोचना की अपार शक्ति भी आ जायेगी। व्याकरण मानसिक अनुशासन बनाये रखने में काफी सहयोग प्रदान करता है।

व्याकरण शिक्षण के उद्देश्य

व्याकरण शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. छात्रों को ध्वनि, समूहों, ध्वनियों के अन्तर, शब्द योजना वाक्यों में शब्दों का स्थान, कार्य व उसके पारस्परिक संबंध का ज्ञान कराना।
2. छात्रों को छंद, रस और अलंकारों का ज्ञान कराना।
3. छात्रों को भाषा के नियमों का विधिवत ज्ञान कराना।
4. छात्रों को शब्दों के शुद्ध रूप, उनकी शुद्ध वर्तनी, वाक्य—रचना के नियम और विराम—चिन्हों के सही प्रयोग का ज्ञान कराना।
5. छात्रों को साहित्य की विभिन्न विधाओं और उनकी विभिन्न लेखन शैलियों का ज्ञान कराना।
6. छात्रों को शब्द, सुक्ति, मुहावरे तथा लोकोक्ति आदि का प्रसंगानुकूल अर्थ बोध करने के योग्य बनाना।
7. छात्रों को बोलने में भाषा के सर्वमान्य रूप का प्रयोग करने तथा लिखने में अनुकूल भाषा और शैली का प्रयोग करने में निपुण बनाना।

8. छात्रों को शुद्ध लिखने, शुद्ध वाक्य रचना करने तथा विराम-चिह्नों का उचित प्रयोग करने में कुशल बनाना।
9. छात्रों को भाषा के गुण-दोष के पहचानने की रुचि विकसित करना।
10. छात्रों में शुद्ध भाषा सीखने व शुद्ध भाषा में प्रयोग की रुचि विकसित करना।
11. छात्रों में व्याकरण सम्मत भाषा के प्रति आदर व सम्मान भाव विकसित करना।
12. छात्रों में भाषा एवं साहित्य की समीक्षा करने की अभिवृत्ति का विकास करना।

व्याकरण शिक्षण को प्रभावी बनाने के सुझाव

1. व्याकरण का ज्ञान छोटी कक्षाओं में न दिया जाये।
2. भाषा का पर्याप्त ज्ञान होने पर ही व्याकरण की शिक्षा दी जाये।
3. व्याकरण की शिक्षा का प्रारंभ व्यवहारिक व्याकरण से किया जाये। व्यवहारिक व्याकरण की शिक्षा भाषा-संसर्ग विधि से प्रदान की जाये।
4. व्याकरण की पाठ्यचर्या बच्चों के स्तर के अनुकूल होनी चाहिए।
5. व्याकरण का शिक्षण आगमन विधि से आरंभ करके निगमन विधि से समाप्त किया जाये।
6. आगमन विधि में उदाहरण बालकों की पाठ्य पुस्तकों से ही लिए जाये।
7. व्याकरण के नियम रटवाये न जायें वरन समझाये जायें तथा छात्रों से निकलवाये जायें।
8. आवश्यकतानुसार दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग भी किया जाये।
9. बालकों की भाषा संबंधी अशुद्धियों को सुधारने का प्रयास करना चाहिए। छात्रों को दण्ड न दिया जाये।
10. व्याकरण एक नीरस विषय है, अतः जब भी बालक ऊब जाये व्याकरण शिक्षण नहीं कराना चाहिए।

अपनी प्रगति की जाँच करें

निर्देश: अ) अपने उत्तर प्रत्येक प्रश्न के बाद दिए गए रिक्त स्थान में लिखें।

व) अपने उत्तरों की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से करें।

प्रश्न-3 व्याकरण शिक्षण के क्या उद्देश्य हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.6 रचना

रचना को अंग्रेजी भाषा में **composition** कहते हैं।

रचना का शब्दिक अर्थ— सजाना, बनाना, सवारना या क्रमबद्ध करना। रचना का अभिप्राय है विचारों को क्रमबद्ध करके शब्द समूहों में व्यक्त करना। रचना शब्द बहुत व्यापक है।

रचना में विभिन्न प्रकार की वाक्य रचना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसके साथ ही साथ वाक्यों की पूर्ति करना चित्र, वर्णन, वार्तालाप, शब्द प्रयोग, पत्र-लेखन, कहानी लेखन, वर्णनात्मक, विवरणात्मक तथा विचारात्मक लेख, पुस्तकों को समालोचना, सारांश लिखना, वाक्यांशों व मुहावरों का प्रयोग, समानार्थी व विलोम शब्दों का ज्ञान व प्रयोग, पर्यायवाची शब्द लिखना, के अन्तर्गत आता है। परन्तु निबंध लेखन इसमें प्रमुख स्थान रखता है।

रचना के भेद

रचना के मुख्यता दो भेद होते हैं।

1. मौखिक रचना
2. लिखित रचना

रचना का अर्थ प्रायः मौलिक लेखन समझा जाता है। परन्तु रचना का अर्थ काफी व्यापक है। यह अभिव्यक्ति मौखिक भी हो सकती है तथा लिखित भी। प्रारंभ में मौखिक अभ्यास के पश्चात ही लिखित अभ्यास कराया जाता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि लिखित रचना का मूलधार मौखिक रचना ही है। मौखिक रचना से बालक का उच्चारण शुद्ध होता है। छात्र में बिना झिझक अपनी बात कहने की शक्ति उत्पन्न होती है। बालक सम्भाषण में निपुण हो जाता है। बालक का भाषा ज्ञान विकसित होने पर लिखित रचना के लिए कहा जाता है। लिखित रचना के लिए कक्षा का वातावरण शांत तथा गंभीर होना चाहिए। लिखित रचना का लेखन सुन्दर क्रमबद्धता भावानुकूल एवं व्याकरण सम्मत भाषा, विराम चिन्हों आदि का उचित प्रयोग होना चाहिए।

हिन्दी वाक्य रचना

प्रारंभ में बालक शब्द बोलता है परन्तु यह शब्द वाक्य ही होता है। वाक्य उन सार्थक ध्वनियों का समूह है जिसमें व्यक्ति की अकांक्षाओं, विचारों तथा भावों की अभिव्यक्ति होती है। वाक्य रचना की विशेषता है शब्दों का क्रम। हिन्दी वाक्यों में पहले कर्ता फिर कर्म तथा बाद में क्रिया आती है। जैसे—गोपाल खाना खाता है। इस वाक्य में गोपाल कर्ता, खाना कर्म तथा खाता क्रिया है। अंग्रेजी वाक्यों में यह क्रम कर्ता क्रिया तथा बाद में कर्म आता है जैसे—गोपाल ईट्स फूड म गोपाल कर्ता ईट्स क्रिया और द फूड कर्म है।

वाक्य स्पष्ट होना चाहिए। वाक्य की एक विशेषता है आकांक्षा। जैसे जब हम गोपाल कहते हैं तो श्रोता का उत्कण्ठा होती है कि गोपाल के संबंध में क्या कहा जा रहा है और जब खाना खाता है वाक्यांश कहा जाता है तब श्रोता की उत्कण्ठा शांत होती है। वाक्य की एक अन्य विशेषता है सामर्थ्य। वाक्य अथवा लेखक के विचारों की व्यक्त करने में समर्थ हो। वाक्य में मधुरता होनी चाहिए। प्राथमिक कक्षाओं में सरल वाक्य रचना का अभ्यास कराना चाहिए। इसके पश्चात मिश्रित तथा संयुक्त वाक्यों का अभ्यास कराना चाहिए। अच्छी वाक्य रचना में विराम चिन्हों का उचित प्रयोग होना चाहिए। निरर्थक शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए। वाक्यों में व्याकरण संबंधी अशुद्धि न हो।

अच्छी रचना की विशेषता

1. लिखित रचना में लेख स्वच्छ तथा स्पष्ट होना चाहिए।
2. रचना में बोल-चाल के शब्दों का प्रयोग होना चाहिए।
3. रचना शिक्षण में भाषा सीधी-सादी, सरल एवं सुबोध होनी चाहिए।
4. रचना शिक्षण में छात्रों के मानसिक स्तर पर ध्यान रखा जाये। छोटी कक्षाओं में रचना का विषय बालकों की रुचि के अनुकूल हो।
5. रचना का आकार व बहुत छोटा हो न बहुत बड़ा हो।
6. रचना में भाषा तथा व्याकरण संबंधी अशुद्धियों पर पर्याप्त ध्यान दिया जाये।
7. रचना में विराम-चिह्नों का उचित प्रयोग हो।
8. रचना में वाक्य विन्यास ठीक होना चाहिए। वाक्यों में शब्दों का प्रयोग उचित स्थान पर हो।
9. रचना में व्यर्थ तथा अप्रसंगिक बातों को स्थान न दिया जाये।
10. रचना में बालकों को अभिव्यक्ति का पूर्ण अवसर दिया जाये।
11. रचना में विचारों का विरोधाभास नहीं होना चाहिए। साथ ही अस्पष्ट वाक्यों का प्रयोग न किया जाये।
12. रचना को अलग-अलग अनुच्छेदों में विभाजित करना चाहिए। एक अनुच्छेद में एक ही भाव होना चाहिए।
13. लिखित रचना का संशोधन छात्रों के सम्मुख किया जाये।
14. लिखित रचना से पूर्व मौखिक रचना का ज्ञान अवश्य करा देना चाहिए।

मौखिक रचना (अभिव्यक्ति) शिक्षण का अर्थ

जब व्यक्ति अपने भावों तथा विचारों को तार्किक क्रम में कलात्मक ढंग से मौखिक रूप से अभिव्यक्ति करता है तो उसे मौखिक अभिव्यक्ति कहते हैं। मौखिक अभिव्यक्ति में भाषण, वाद-विवाद, वार्तालाप, विचार-विमर्श आदि आते हैं। प्रारंभ में बालक अपने विचार बोलचाल के द्वारा ही दूसरों पर प्रकट करता है।

मौखिक रचना शिक्षण के उद्देश्य

मौखिक रचना के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. छात्रों को शब्द, सूक्ति, मुहावरों, ध्वनि समूहों का ज्ञान कराना।
2. छात्रों को शुद्ध वाक्य रचना करना सिखाना।
3. छात्रों को विभिन्न शब्दवाली का ज्ञान कराना।
4. छात्रों को वार्तालाप तथा भाषण की विभिन्न शैलियों का ज्ञान प्रदान करना।
5. छात्रों को अपने भाव विचारों को तार्किक व कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करने में निपुण बनाना।
6. छात्रों को शुद्ध उच्चारण, उचित ध्वनि, एवं आरोह—अवरोह के साथ बोलने में प्रशिक्षित करना।
7. छात्रों को उचित भाषा—शैली एवं उचित उदाहरणों का प्रयोग करने में निपुण करना।
8. छात्रों को उचित हाव—भाव एवं आत्म—विश्वास के साथ बोलने में निपुण करना।
9. छात्रों में भाषा—तत्वों एवं भाषण की विभिन्न शैलियों को जानने की रुचि उत्पन्न करना।
10. छात्रों में चिन्तन मनन एवं अवलोकन की अभिवृत्ति का विकास करना।

मौखिक अभिव्यक्ति शिक्षण विधि

प्राथमिक स्तर

प्राथमिक स्तर (कक्षा 1 से 5 तक) पर बालक को भाषा सुनने व बोलने के अवसर प्रदान करने चाहिए। जहाँ तक हो सके बोलने में उसकी गलतियों में सुधार करते चलना चाहिए। इस स्तर पर हमें उन्हें वर्ण, शब्द वाक्य, उचित स्तर, उचित गति, स्वराघात, मुहावरे, लोकोक्ति आदि का ज्ञान कराना चाहिए। उन्हें वाक्य रचना के नियम भी बता देने चाहिए। वार्तालाप करने में उसकी रुचि को विकसित करना चाहिए। इस स्तर पर निम्नलिखित विधियों का सहारा लिया जा सकता है—

1. कहानी कहना तथा सुनना।
2. बाल-गीत व कविताओं का सुनना।
3. चित्रों का वर्णन।
4. समाचार सुनना और सुनाना।
5. अभिनय कराना।

बालकों को जो भी समाचार या कहानी सुनाई जाये उसे लिखने के लिए भी कहा जाये। अपनी लिखित सामग्री को फिर वे स्वयं पढ़ें। पूर्व माध्यमिक स्तर (कक्षा 6 से कक्षा 8) पर बालक मौखिक अभिव्यक्ति ठीक प्रकार से कर लेते हैं। परन्तु बालकों को क्षेत्रीय प्रभाव से युक्त करने के लिए शुद्ध भाषा प्रयोग पर बल देना चाहिये। छात्रों को व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग करने पर विशेष बल देना चाहिए। बालक जो भी कहानी, लेख, निबन्ध नाटक आदि पढ़ें उनसे सारांश सुना जा सकता है। उनकी त्रुटियों का साथ-साथ सुधारते चलना चाहिए। इसके अतिरिक्त साहित्यिक कार्यक्रमों जैसे-भाषण, वाद-विवाद अन्तावक्षरी तथा अभिनय आदि का आयोजन करना चाहिए।

माध्यमिक स्तर

माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 से 11 या 12) पर बालकों को मौखिक भाषा की शिक्षा वास्तविक परिस्थितियों में देना उपयुक्त होगा। इस स्तर पर बालकों को भाषण, वाद-विवाद अन्तावक्षरी नाटक, अभिनय तथा अन्य साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन करना चाहिए। इन कार्यक्रमों में भाग लेने से उनकी मौखिक भाषा का अवश्य ही विकास होगा। कक्षा में बालकों को गद्य-पद्य नाटक कहानी लेख निबंध आदि का शिक्षण किया जाये तथा वे पुस्तकालय एवं वाचनकाल में अधिकाधिक साहित्य का अध्ययन करें। मौखिक भाषा के विकास में कहानी कहने का बड़ा महत्व है। शिक्षक को कहानी पुस्तक से पढ़कर सुनाने की अपेक्षा मौखिक रूप से सुनानी चाहिए। इस प्रकार सुनाने से कक्षा में सजीवता रहती है। कहानी सुनाने में निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

1. कहानी शिक्षक को अपनी भाषा व शैली में सुनानी चाहिए।

2. कहानी मौखिक रूप से सुनानी चाहिए।
3. कहानी सुनाने से पूर्व शिक्षक को पूर्ण तैयारी कर लेनी चाहिए।
4. शिक्षक को कहानी में प्रयुक्त मुहावरों तथा लौकोक्तियों को रट लेना चाहिए जिससे पाठ रोचक हो जाता है।
5. कहानी सुनाने से पूर्व उसका एक या दो बार अभ्यास कर लेना लाभदायक होता है।
6. कहानी सुनाने समय शिक्षकों को कहानी सुनाने का प्रयोजन छात्रों के सम्मुख रखना चाहिए।
7. कहानी सुनाते समय सरल व रोचक भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
8. कहानी सुनाते समय विराम चिन्हों का उपयुक्त प्रयोग करना चाहिए। साथ ही उचित हाव-भाव एवं उतार-चढ़ाव के साथ कहानी सुनानी चाहिए।
9. कहानी सुनाते समय शिक्षक स्तर इतना ऊँचा हो कि कक्षा के सभी छात्र सरलता से सुन सकें।

लिखित रचना-शिक्षण की विधियाँ

रचना शिक्षण की विधियाँ विभिन्न स्तरों के लिए भिन्न-भिन्न होगी। रायबर्न (Rybern) रचना शिक्षण की ने लिखा है कि प्रारंभिक अवस्था में बालकों से सरल वाक्य बनवाये जायें। साधारण प्रश्नों के उत्तर लिखवाये जायें, रिक्त स्थानों की पूर्ति करना। शब्दों में से एक उपयुक्त शब्द चुनना आदि के अभ्यास कराये जा सकते हैं। फिर भी प्राथमिक स्तर पर निम्नलिखित विधियों का प्रयोग किया जाता है। —

प्राथमिक स्तर पर रचना शिक्षण विधियाँ

1. **खेल विधि**— प्राथमिक स्तर पर बालकों की खेल में काफी रुचि रहती है। बालक जोड़ने तथा तोड़ने की क्रिया में बड़ी रुचि लेते हैं। भाषा की रचना करने में भी शब्दों व वाक्यों का जोड़ना ही है। खेल-खेल में बालकों को कहानी आदि बनाने की प्रेरणा प्रदान की जा सकती है। कक्षा के बालकों को दो समूहों में बाँट कर उनसे कुछ वाक्य लिखवाये जायें। प्रथम समूह का बालक दूसरे समूह के प्रत्येक बालक के वाक्य को पढ़े

व गलती होने पर उसे शुद्ध करे। इसी प्रकार दूसरे समूह के बालक करें। इस प्रकार पढ़ने व लिखने की शुद्धता के आधार पर हार-जीत का निर्णय किया जाये।

इसी प्रकार बालकों को एक गोलाकार घेरे में बैठाया जाये। एक डिब्बा बीच में रखा जाये। उसमें अनेक चिटों पर अशुद्ध वाक्य लिखकर डाल दिए जायें। एक बालक घेरे में बैठे बालकों के चारों तरफ दौड़ लगाता जाये। दौड़ने वाला बालक घेरे में बैठे बालकों में से जिस बालक के पास खड़ा हो जाये वह बालक उस डिब्बे में रखी एक चिट निकाले उसे पढ़े तथा उसे शुद्ध करे।

2. चित्र रचना विधि— यह विधि प्राथमिक स्तर के छात्रों के लिए काफी उपयुक्त है। जिस विषय पर रचना करानी होती है उस विषय से संबंधित चित्र कक्षा में दीवार पर टॉग दिया जाता है। अध्यापक उन पर प्रश्न करता है। छात्र उनके उत्तर देते हैं। इस प्रकार अन्त में बच्चों से अपने शब्दों में चित्र वर्णन करने के लिए कहा जाता है। इसमें पहले मौखिक अभिव्यक्ति कराई जाती है, बाद में लिखित अभिव्यक्ति का अवसर दिया जाता है।

3. अनेक शब्दों का प्रयोग— कक्षा 4 के छात्रों को अनेक शब्द दिये जा सकते हैं। उनसे सरल वाक्य रचना कराई जाये। मदारी दो बन्दर, डुगडुगी बालक नाचना, लाठी संसुराल, खाना, करना, छोटी साली कुर्सी आदि शब्द दे दिये जाये तथा बालक निम्न प्रकार से सरल वाक्य बनाने का अभ्यास करें।

1. एक मदारी है।
2. उसके पास दो बन्दर हैं।
3. मदारी, डुगडुगी बजा रहा है।
4. बन्दर नाच रहा है।
5. बालक तमाशा देख रहे हैं।
6. लाठी लेकर संसुराल जा रहा है।

4. भाषा यन्त्र प्रणाली—भाषा यन्त्र प्रणाली के माध्यम से छोटे-छोटे बच्चे खेल-खेल में ही रचना करना सीख जाते हैं। इस प्रणाली के चार मुख्य साधन हैं—

ग्रामोफोन, भाषा अथवा रचना के रिकार्ड, चित्र एवं सहायक पुस्तकें। ग्रामोफोन पर भाषा अथवा रचना के रिकार्ड चढ़ाकर उसे चालू कर दिया जाता है। दीवार पर सामने चित्र टंगा होता है। शिक्षक रिकार्ड से निकलने वाले वाक्यों के अनुसार संकेतन से चित्र पर संकेत करता चलता है। बच्चे रिकार्ड का वर्णन सुनते हैं तथा चित्र देखते चलते हैं। सहायक पुस्तकों के माध्यम से छात्र रचना संबंधी सहायता प्राप्त करते हैं वर्णन पूरा होने के पश्चात अध्यापक बालकों से प्रश्न पूछ कर रचना को दोहराता है। तत्पश्चात अध्यापक छात्रों से रचना लिखते के लिए कहता है। इस प्रणाली में बालकों के आँख, कान व हाथ का सक्रिय सहयोग होने के कारण रचना में उनकी रुचि बनी रहती है। यह विधि खर्चीली भी है।

माध्यमिक स्तर पर रचना—शिक्षण विधियाँ

माध्यमिक स्तर पर रचना—शिक्षण की निम्नलिखित विधियों का प्रयोग किया जा सकता है—

1. **प्रश्नोत्तर प्रणाली**— रचना शिक्षण की यह एक प्राचीन प्रणाली है। जिस विषय पर रचना कार्य कराना होता है उससे संबंधित प्रश्न शिक्षक छात्रों से पूछता है। छात्र उनके उत्तर देते हैं। प्रश्न क्रमबद्ध तरीके से पूछे जाते हैं ताकि रचना का भी क्रमबद्ध विकास की सके। इस प्रणाली से छात्रों की कल्पना व तर्क —शक्ति का विकास होता है। छात्रों में वाक्य रचना की शक्ति विकसित होती है। इस प्रणाली में पहले मौखिक कार्य कराना जाता है और तत्पश्चात लिखित कार्य कराया जाता है। उदाहरण के लिए हमारा पुस्तकालय पर रचना कार्य कराने के लिए प्रश्नोत्तर निम्नलिखित तरीके से किये जा सकता है—

स.क्र.	प्रश्न	उत्तर
1	तुम्हारा नाम क्या है?	मैरा नाम हैरी है।
2	तुम किस विद्यालय मे पढ़ते हो?	मैं दयानन्द विद्यालय खुरजा में पढ़ता हूँ।
3	तुम्हारे विद्यालय के प्रधानाचार्य	हमारे विद्यालय के प्रधानाचार्य का नाम राम

	का क्या नाम है?	प्रसाद गुप्ता है।
4	तुम्हारे पुस्तकालय कहाँ बना है?	हमारा पुस्तकालय विद्यालय के पूर्वी किनारे पर बना है।
5	तुम्हारे विद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष का क्या नाम है?	हमारे विद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष का नाम श्री राम गोपाल गुप्ता है।
6	तुम्हारे पुस्तकालय में कितने कमरे हैं?	हमारे पुस्तकालय में 5 कमरे हैं।
7	तुम्हारे पुस्तकालय में कितनी अलमारियाँ हैं।	हमारे पुस्तकालय में 20 बीस अलमारियाँ हैं।
8	तुम्हारे पुस्तकालय में कितनी पुस्तकें हैं।	हमारे पुस्तकालय में एक हजार पाँच सौ पुस्तकें हैं।
9	तुम्हारे पुस्तकालय में कौन-कौन से अखबार आते हैं।	हमारे पुस्तकालय में अमर उजाला हिन्दूस्तान ,पंजाब केसरी, दैनिक जागरण, आदि अखबार आते हैं।

2. **उदबोधन प्रणाली**— उदबोधन विधि प्रश्नोत्तर प्रणाली का विकसित रूप है। इस प्रणाली में छात्रों की कल्पना शक्ति व विचार शक्ति को प्रेरित किया जाता है। छात्रों को प्रेरणा प्रदान करके ज्ञातत्व तथ्यों की जानकारी उनसे प्राप्त की जाती है। इस प्रकार उनके सुषुप्त ज्ञान को जाग्रत करने का प्रयत्न किया जाता है। इस प्रणाली का प्रयोग तब उपयुक्त होता है। जब छात्र वर्णनात्मक निबंधों को लिखने में समर्थ हो जाये। किसी दृश्य का वर्णन, मेले का वर्णन, जीवन-चरित्र, आत्म-कक्षा ऐतिहासिक तथा भौगोलिक स्थलों का वर्णन, ग्राम्य जीवन, बसन्त ऋतु आदि विषयों के संबंध में रचना की शिक्षा देने के लिए उदबोधन विधि का प्रयोग किया जा सकता है।

3. **प्रवचन प्रणाली**— अध्यापक कक्षा में किसी नवीन विषय पर अपना प्रवचन या व्याख्यान देता है। छात्र ध्यानपूर्वक उसे सुनते हैं। अध्यापक उक्त विषय पर लिखने का आदेश देता है। इसके पश्चात छात्र श्रवण किये गये तथ्यों भावों तथा विचारों को क्रमबद्ध करते लिखते हैं। यह प्रणाली वैज्ञानिक विवेचानात्मक अज्ञात तथा नवीन विषयों पर रचना करने के लिए उपयुक्त रहती है।
4. **तर्क प्रणाली या वाद—विवाद प्रणाली**— उच्च कक्षाओं में इस प्रणाली का प्रयोग किया जाता है। विवादास्पद विषयों पर रचना कराने के लिए यह प्रणाली उपयुक्त है। दहेज प्रथा, जाति—प्रथा सहशिक्षा, धर्म व राजनीति, धार्मिक कट्टरता —एक अभिशाप, सती—प्रथा, मूर्ति—पूजा आदि विषयों पर छात्रों के बीच तर्क — वितर्क व वाद—विवाद होता है। पक्ष व विपक्ष में अनेक तर्क प्रस्तुत किए जाते हैं। कक्षा के छात्रों को दलों में बाँट कर भी वाद—विवाद होता है। पक्ष—विपक्ष में अनेक तर्क प्रस्तुत किए जाते हैं। इसके पश्चात शिक्षण अपना निर्णय भी दे देता है। तत्पश्चात छात्रों को इसे लिखने का निर्देश दिया जाता है। प्रणाली में छात्र सक्रिय एवं जागरूक रहते हैं तथा उनकी तर्क क्षमता का विकास होता है।
5. **निर्देशन विधि**—निर्देशन प्रणाली में शिक्षक छात्रों को रचना का विषय बता देता है। वह पुस्तकें पत्र—पत्रिकाओं तथा अन्य सहायक सामग्री का निर्देशन दे देता है। छात्र पुस्तकालय में सहायक सामग्री व पुस्तकों का स्वयं अध्ययन करते हैं, खोज करते हैं। साथ ही आपस में विचार विमर्श भी करते हैं , आवश्यकता पड़ने पर शिक्षक भी उनकी सहायता करते हैं। जैसे—हमारे पूर्वज, मध्यकालीन भारत, प्राचीन शिक्षा प्रणाली आदि विषयों पर रचना का विकास कर सकते हैं।
6. **रूपरेखा प्रणाली**—यह प्रणाली माध्यमिक व उच्च स्तरों पर स्वतंत्र रचना के लिए उपयुक्त है। इस प्रणाली में कहानी, निबंध या अन्य किसी विषय पर रचना कार्य कराने के लिए संबंधित विषय की रूपरेखा छात्रों के सम्मुख रख देता है। छात्र उस रूपरेखा के आधार पर सोच विचार कर रचना करते हैं। जैसे—होली, रेल यात्रा, भारतीय किसान, पोस्ट मैन चॉदनी रात में नौका विहार, माहात्मा गाँधी आदि। छात्र उपयुक्त रूपरेखा के आधार पर सोच—विचार कर रेलयात्रा का लिखित वर्णन करें।

रचना संबंधी सामान्य अशुद्धियाँ

रचना संबंधी सामान्य अशुद्धियों का वर्णन नीचे किया जा रहा है—

1. सुलेख की समस्या ।
2. उचित वर्तनी ;चमससपदहद्ध की अशुद्धियाँ ।
3. लिपि संबंधी अशुद्धियाँ ।
4. व्याकरण संबंधी अशुद्धियाँ ।
5. वाक्य संबंधी अशुद्धियाँ ।
6. मुहावरे व कहावतों संबंधी अशुद्धियाँ ।
7. वाक्य रचना संबंधी अशुद्धियाँ ।
8. रचना में अनावश्यक और निरर्थक शब्दों का प्रयोग ।
9. शब्दवाली सम्बन्धी अशुद्धियाँ ।
10. विचारों का क्रमबद्ध न होना ।
11. उचित भाषा—शैली का अभाव ।
12. अनुच्छेदों संबंधी अशुद्धियाँ ।
13. विचार व भावों को पूर्णता के साथ स्पष्ट न करना ।
14. विचारों व भावों में विरोधाभास होना ।

रचना संबंधी अशुद्धियों के कारण

लिखित रचना संबंधी अशुद्धियों के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं—

1. **स्वाध्याय का अभाव**—स्वाध्याय (self study) रचना को सशक्त बनाता है। जो छात्र स्वाध्याय नहीं करते उनकी रचना में व्याकरण संबंधी, भाषा एवं विचारों संबंधी अनेक अशुद्धियाँ होती हैं।
2. **रुचि का अभाव**—विषय में रुचि न होने से भी अशुद्धियाँ होती हैं, अतः यह आवश्यक है कि छात्रों में रचना के प्रति रुचि जाग्रत की जाये।

3. **लिखने की असावधानी**—लिखने में छात्र सावधानी नहीं बरतते। असावधानी अशुद्धियों की जननी है।
4. **लिखने की असावधानी**—रचना अथवा लिखते समय उचित शब्द व वाक्य नहीं बन पाते। लेख तथा विराम चिन्हों, मात्राओं आदि को अशुद्धियाँ हो जाती हैं।
5. **भाषा व व्याकरण संबंधी अज्ञानता**—भाषा तथा व्याकरण संबंधी अज्ञानता के कारण भी छात्र लिखने में काफी अशुद्धियाँ करते हैं।
6. **संशोधन कार्य का अभाव**—छात्रों को दिये गये गृहकार्य का संशोधन न होने से उनकी गलतियाँ ठीक नहीं हो पाती। अतः वे उन गलतियों को लिखित कार्य में दुहराते रहते हैं।
7. **अभ्यास का अभाव**—छात्रों को लिखित कार्य का अभ्यास न कराने से भी अनेक त्रुटियाँ हो जाती हैं।
8. **मौखिक रचना का अभाव**—जैसा कि पहले बताया जा चुका है मौखिक रचना लिखित रचना का आधार है। मौखिक रचना न होने तथा उसकी अशुद्धियों को दूर न करने से वे अशुद्धियाँ लिखित रचना में आ जाती हैं।
9. **उचित निर्देशों का अभाव**—छात्रों में उचित निर्देश न देने के कारण भी वे अनेक गलतियाँ करते हैं।

लिखित रचना का संशोधन

रचना संबंधी अशुद्धियों को दूर करने के लिए निम्नलिखित बातों की तरफ ध्यान देना चाहिए—

1. रचना संबंधी अशुद्धियों को सभी बच्चों के सामने ठीक करना चाहिए। इसके लिए श्यामपट्ट पर लिखकर समझाया जाये। यदि एक या दो छात्र ही गलती करते हैं तो उन्हें व्यक्तिगत रूप से समझाया जाये।
2. गृहकार्य का संशोधन अवश्य करना चाहिए। यदि यह कार्य विद्यालय में न हो सके तो घर पर लाकर संशोधन करना चाहिए।

3. छात्रों द्वारा संशोधन कार्य करने के उपरान्त शिक्षक को यह देखना चाहिए कि क्या वास्तव में छात्र ने संशोधन कार्य कर लिया है।
4. लिखित कार्य का निरीक्षण पूरी सावधानी से करना चाहिए।
5. छात्रों की अशुद्धियों के प्रति शिक्षक का दृष्टिकोण सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए। छात्रों से नाराज नहीं होना चाहिए।
6. अधिक अशुद्धियाँ करने वाले छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान देना चाहिए।
7. छात्रों में सावधानी से लिखने की आदत का विकास करना चाहिए।
8. रचना के लिए अभ्यास पुस्तिका बनवा लेनी चाहिए। इस पुस्तिका पर छात्रों से विधिवत अभ्यास कराना चाहिए।
9. जहाँ तक हो सके छात्रों को लिखित कार्य सप्ताह में दो बार दिया जाये। यह कार्य अधिक न दिया जाये।
10. रचना के निरीक्षण कार्य की सुगमता एवं सरलता के लिए कक्षा में छात्रों की संख्या कम से कम रखी जाए। यह संख्या अधिक से अधिक पैंतीस हो सकती है।

अभ्यास के लिए क्रियाकलाप 3			
निम्न मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करो—			
स. क्र.	मुहावरा	अर्थ	वाक्य
1	नाच न जाने ऑगन टेडा		
2	थोथा चना वाजे घना		
3	एक तो करेला दूजा नीम		

	चडा		
4	सूरज को दिया दिखाना		
5	सिर मुडाते ही ओले पडना		

अपनी प्रगति की जाँच करें

निर्देश: अ) अपने उत्तर प्रत्येक प्रश्न के बाद दिए गए रिक्त स्थान में लिखें।

व) अपने उत्तरों की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से करें।

प्रश्न-4 मौखिक रचना शिक्षण के क्या उद्देश्य हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.7 सारांश

किसी भाषा का ज्ञान तब तक अधूरा है, जब तक उस भाषा में प्रयुक्त शब्दों का पूरा-पूरा ज्ञान न हो। किसी समाज अथवा राष्ट्र के इतिहास की जानकारी प्राप्त करनी हो तो उसकी भाषा का ज्ञान प्राप्त करना होगा। यदि किसी भाषा की गंभीरता और हल्केपन का पता लगाना

हो तो उसकी शब्दावली पर दृष्टि डालनी होगी। इन सभी बातों के आधार पर हम कह सकते हैं कि शब्द भाषा की निधि है।

व्याकरण वह शास्त्र है जो भाषा से संबंधित नियमों का ज्ञान कराता है। किसी भाषा की संरचना का सिद्धांत अथवा नियम ही उसका व्याकरण है। यदि नियमों द्वारा भाषा की स्थिति न रखा जाए तो उसकी उपादेयता, महत्ता तथा स्वरूप ही नष्ट हो जायेगा। अतः भाषा के शीघ्र परिवर्तन को रोकने के लिए ही व्याकरण का उस पर नियंत्रण कर दिया गया है। भाषा यदि साध्य है तो व्याकरण उसका साधन है।

रचना का अभिप्राय है विचारों को क्रमबद्ध करके शब्द समूहों में व्यक्त करना। रचना शब्द बहुत व्यापक है।

रचना में विभिन्न प्रकार की वाक्य रचना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

मौखिक रचना से बालक का उच्चारण शुद्ध होता है। छात्र में बिना झिझक अपनी बात कहने की शक्ति उत्पन्न होती है। बालक सम्भाषण में निपुण हो जाता है। बालक का भाषा ज्ञान विकसित होने पर लिखित रचना के लिए कहा जाता है। लिखित रचना के लिए कक्षा का वातावरण शांत तथा गंभीर होना चाहिए। लिखित रचना का लेखन सुन्दर क्रमबद्धता भावानुकूल एवं व्याकरण सम्मत भाषा, विराम चिन्हों आदि का उचित प्रयोग होना चाहिए।

1.6 चिंतन के लिए प्रश्न

- व्यक्तिगत भिन्नता के अध्ययन की आवश्यकता क्यों है?
- साक्षात्कार में किन किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है?
- माध्यमिक स्तर पर रचना—शिक्षण की विधियाँ कौन—कौन सी हैं?
- रचना संबंधी अशुद्धियों के क्या कारण हैं?

1.7 प्रगति की जांच के लिए उत्तर

1. **केथरीन ओकानर** के शब्दों में पठन वह जटिल अधिगम प्रक्रिया है। जिसमें दृश्य श्रव्य एवं गतिवाही सर्किटों का मस्तिष्क के अधिगम केन्द्र से संबंध निहित है। भाषा सीखने का स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक क्रम है— श्रवण, भाषण, पठन एवं लेखन। इन कौशलों में से वर्तमान वैज्ञानिक प्रतिस्पर्द्धात्मक व व्यवस्तता के युग में पठन बोध का विशेष महत्व है। तीन आर (थ्री आर—रेडिंग ,राइटिंग व रिथमोटिक) में भी पढ़ने का प्रथम स्थान है। पठन पर ही अन्य विषयों का ज्ञान निर्भर है। यथोचित पठन अभ्यास पर ही बालक की समस्त मानसिक ओर भावात्मक उन्नति आश्रित है।
2. भाषा की दृष्टि से शब्द का बड़ा महत्व है। आदिम युग से लेकर अर्वाचीन युग तक व्यक्ति जो कुछ ज्ञान ग्रहण कर पाया है वह शब्दों के रूप में ही आज विश्व के सामने संचित तथा सुरक्षित है। भावों की अभिव्यक्ति का एकमात्र साधन शब्द ही है। किसी भाषा का ज्ञान तब तक अधूरा है, जब तक उस भाषा में प्रयुक्त शब्दों का पूरा-पूरा ज्ञान न हो। यदि किसी भाषा की गंभीरता और

हल्केपन का पता लगाना हो तो उसकी शब्दावली पर दृष्टि डालनी होगी। इन सभी बातों के आधार पर हम कह सकते हैं कि शब्द भाषा की निधि है।

3. व्याकरण शिक्षण के निम्न उद्देश्य हैं

- छात्रों को ध्वनि, समूहों, ध्वनियों के अन्तर, शब्द योजना वाक्यों में शब्दों का स्थान, कार्य व उसके पारस्परिक संबंध का ज्ञान कराना।
- छात्रों को छंद, रस और अलंकारों का ज्ञान कराना।
- छात्रों को भाषा के नियमों का विधिवत ज्ञान कराना।
- छात्रों को शब्दों के शुद्ध रूप, उनकी शुद्ध वर्तनी, वाक्य-रचना के नियम और विराम-चिन्हों के सही प्रयोग का ज्ञान कराना।

4. मौखिक रचना शिक्षण के निम्न उद्देश्य हैं

- छात्रों को शब्द, सूक्ति, मुहावरों, ध्वनि समूहों का ज्ञान कराना।
- छात्रों को शुद्ध वाक्य रचना करना सिखाना।
- छात्रों को विभिन्न शब्दवाली का ज्ञान कराना।
- छात्रों को वार्तालाप तथा भाषण की विभिन्न शैलियों का ज्ञान प्रदान करना।
- छात्रों को अपने भाव विचारों को तार्किक व कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करने में निपुण बनाना।

संदर्भ ग्रंथ सूची

कुशवाह मंजू , सोनी संदीप (2016), हिन्दी शिक्षण, राखी प्रकाशन

जीत योगन्द्र, (2007), हिन्दी भाषा शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर